ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

ग्राम विकास आत्मनिर्भरता एवं खादी : एक समाजिक अध्ययन

डॉ. चन्द्रबीर प्रसाद यादव अतिथि सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र विभाग एस.डी.जी.डी0 महाविद्यालय, बेनीपुर (दरभंगा)

सार :

गाँधी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए विभिन्न स्वदेशी विकास पर बल दिया। वे परिवर्तित समयानुकुल साधनों के आधार पर पुराने उद्योगों का पुनरूत्थान और प्रचार चाहते थे। वे गाँवों की प्राचीन की कृषि, बुनाई–कटाई, बढ़ईगिरी, लुहारगिरी, कागज बनाना, मधुमक्खी पालन और रेशम का कीड़े पालना, खिलौने बनाना आदि धंधा का नये युग के अनुसार यथासंभव प्रसार करने के पक्षपाती थे। गाँधीजी उपर्युक्त धंधों में कटाई व बुनाई पर विशेष जोर देते थे। उनके विचार में ग्रामोद्योग के सौर मंडल में खादी का उद्योग सूर्यवत है उस पर जो धन व्यय किया जाता है वह कपास उगाने वाले कृषक, कढ़ने वाले जुलाहे, रंगने वाले रंगरेज आदि में बँट जाता है। इस प्रकार धन के समान वितरण का यह उत्तम साधन है। इस उद्योग की एक विशेषता यह है कि ग्रामीणों को खाली समय में रोजगार मिल गया है ; साथ ही यह सर्वसुलभ और सर्वोपयोगी है। कोई भी व्यक्ति कहीं भी चरखा चला सकता है और खादी उत्पादन में सहयोग दे सकता है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि गाँधी की अर्थनीति के मूर्तरूप का प्रतीक चरखा है।

मुख्य–शब्द : *ग्राम, खादी, कुटीर उद्योग, आत्मनिर्भरता, अर्थनीति*

परिचय :

भारत गाँवों का देश है, अतः ग्रामवासिनी भारत माता के गाँव जबतक संगठित और स्वतंत्र थे, भारत का पौरुष उसकी अस्मिता और इसकी संस्कृति अक्षुण्ण रही। गुर्जर, प्रतिहार, यवन, पठान, मुगल आए और चले गए। लेकिन भारत की आतंरिक शक्ति अप्रभावित रही। राजसत्ता राजधानियों में अलेखियाँ करती रही। ग्रामों का अंतः स्थल प्रदूषित नहीं था। इसका और मूल कारण था कि गाँव प्रायः स्वावम्बी थे। गाँव में कृषि और ग्रामोद्योग मजबूत था। गाँव की कृषि और ग्रामोद्योग इसकी मृत्यंजय अर्थव्यवस्था का आधार था। गाँव की पंचायत इसकी विधि व्यवस्था का मेरूदण्ड था। गाँव की पाठशालाओं में ही शिक्षा मिलती थी और गाँव में ही नैतिकता और आचार विचार का पाठ मिलता था। संक्षेप में गाँव की व्यवस्था में समस्त गांव के विकास एवं ग्राम स्वराज का भाव निहित था। स्थानीय योजनाएँ, पुरुषार्थ और अभिक्रम यही था। ग्राम स्वराज का आधार नौकरशाही और विकेन्द्रित योजना का विरोध नहीं था। जनविरोधी पूँजी और नवनिवेश की व्यवस्था नहीं थी तो विदेशी मुदा के लिए हाहाकार था और न अधिक संचय के लिए मारामारी। स्वदेशी ग्राम सुधार का धर्म था और आमजन पर ग्रामीण उद्योग के कारण बेरोजगारी एवं अर्द्ध बेरोजगारी का भूत कभी दिखाई नहीं देता था।

लेकिन अंग्रेजी हुकुमत की स्थापना के साथ ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का यह दृश्य चलचित्रों के रोमांटिक दृश्यों की तरह देखते–देखते बदल गया। अंग्रेजों ने बड़े कुटनीतिक तरीके से कुटीर उद्योगों को नष्ट कर दिया। नौकरशाही और केन्द्रित योजना से गाँवों को बाँध दिया गया। अब बेरोजगारी बढ़ी। लोग भिक्षा माँगने को विवश हो गए। स्वतंत्रता संग्राम के समय गाँधी जी की दृष्टि भारतीय गाँवों की इस दुर्दशा पर पड़ी। सोचने के बाद उन्हें ज्ञात हुआ कि शोषण ही इस दुर्दशा का मूल कारण है और यांत्रिकीरण इसकी जड़ में निहित है। विनोवा भावे ने भी माना है कि पहले अनेक ऐसे राज्य बदले तभी देहात का यह असली स्वराज नष्ट नहीं हुआ था। इसलिए हमें कभी रोटियों के लाले नहीं पड़े। किन्तु अंग्रेजी राज्य में यह खादी का स्वराज देहाती उद्योग धंधों का स्वराज नष्ट हो गया और देहात वीरान और डरावने लगने लगे।

उपर्युक्त असहनीय स्थिति से देश को उबारने के लिए गाँधी जी ने स्वराज को रचनात्मक कार्यो से जोड़ दिया। गाँधीजी ने रचनात्मक कार्यों को स्वराज्य का प्रतीक मानते थे। गाँधी ने गाँवों की आत्मनिर्भरता में ही स्वराज के चित्र को देखा। स्वावलम्बन गाँधीनीति का मूल मंत्र था। अतः उन्होंने प्रत्येक गाँव के उद्योग–धंधों के प्रचलन पर बल दिया। इसका कहना था कि दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएँ गाँव में ही तैयार होनी चाहिए। इन्होंने ग्रामों को आत्मनिर्भर बनाने की सलाह और नगरों पर कम से कम आश्रित होने का विचार दिया। ग्रामीण दरिद्रता का उन्मूलन कर, ग्राम और नगर की आय की विषमता को मिटाने तथा स्वदेशी उद्योगों के संरक्षण, संवर्द्धन तथा विकास के लिए उन्होंने ग्राम–उद्योगों के संरक्षण व पुनरूद्धार पर जोर दिया। वर्तमान व्यापारी और नागरिक व्यवस्था के बदले वे एक नवीन विकेन्द्रित ग्रामीण सभ्यता के निर्माण की वकालत करते थे ताकि थोड़े से नगर असंख्य गाँवों का शोषण न कर सके और प्रत्येक गाँव एक स्वावलम्बी इकाई बन सके। गाँधी के शब्दों में – ''The Only way to emarcipate the nation from its age long temper and trust ration was to wake the villages of India self-sufficient and self - reliant through the centerlised structure of village republic ''.

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

हस्तशिल्प :

भारतीयों की कमरतोड़ गरीबी के कारण ही गाँधीजी राजनीति में आए थें। उस तथ्य को वे जान गए गए थे कि विदेशी यंत्रों के आक्रमण के कारण कुटीर उद्योग का विनाश ही भारतीयों की गरीबी का बड़ा कारण था। उन्होंने हिन्द–स्वराज में लिखा है – ''जब मैंने श्री दत्त की Economic History of India पढ़ी'' मैं रोया था और अब भी जब मैं उन्हें याद करता हूँ मेरा दिल दुःखी हो जाता है। यंत्रों ने ही भारत को गरीब बना दिया है। मैनचेस्टर ने हमारी कितनी क्षति की है। इसका अनुमान करना कठिन है। मैनचेस्टर के कारण ही भारतीय हस्तशिल्प विलूप्त हो गए। गाँधीजी का यह निश्चित मत था कि पुराने जीवन में भारतीय किसान अधिक सुखी थे। क्योंकि अवकाश के छ : महीनों में वे सहायक उद्योगों का आश्रय ले सकते थे। 1908 तक गाँधी यह समझ चुके थे कि अब उपयुक्त चरखा हो सकता है। उनके शब्दों में 1908 में लंदन में मैंने चरखे को खोज निकाला। मैं वहाँ दक्षिण अफ्रीका के प्रतिनिधिमंडल के नेता के रूप में गया था। उसी समय बहुत से निष्ठावान छात्रों एवं अन्यों के सम्पर्क में आए। भारत की परिस्थिति के बारे में हमने लम्बी वार्तालाप किये और बिजली की कौंध की तरह मुझे दिख गया कि चरखे के विना स्वराज्य नहीं मिलती। मुझे तुरंत ज्ञान हो गया कि हममें से प्रत्येक को सूत काटना पड़ेगा।

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि उन्होंने चरखे को भारत में वस्त्र की कमी को दूर करने के साधन के रूप में ग्रहण किया था और इसलिए मिलों से उनका कोई झगड़ा नहीं था। 1920 में उन्होंने कहा था– मिलों से मेरा कोई झगड़ा नहीं है, मेरा विचार अविश्वसनीय रूप से सरल है। भारत को प्रत्येक वर्ष प्रति व्यक्ति करीब 13 गज वस्त्र की आवश्यकता होती है। मेरा विश्वास है कि इस आवश्यकता का आधा भाग ही यहाँ उत्पन्न हो पाता है, जबकि उसकी रूई की पैदावार उसकी पूरी आवश्यकता के अनुरूप है। अतएव भारत के लिए आवश्यकता है कि वह अपने मुख्य धंधे, कृषि की कमी को किसी दूसरे काम से पुरा करे। लाखों व्यक्तियों के लिए ऐसा काम कटाई ही है। उन्होंने 1924 में घोषणा की थी– ''मेरा कहना है कि आज जब भारत में लाखों व्यक्ति दुर्दशाग्रस्त और भुखमरी के शिकार है, विदेशी वस्तुओं का आयात करना बहुत बड़ा पाप है। भारत में आयातित विदेशी वस्त्र का प्रत्येक ''गज'' भूखे–मरते गरीबों के मुँह से छीने हुए रोटी के टुकड़े के समान है।''

चरखा को प्रारंभ में गरीबों का सहारा मात्र माना जाता था। आगे चलकर ग्रामीण आत्मनिर्भरता का आधार बना । गाँधी ने प्रत्येक परिवार के लिए चरखा काटने का कार्यक्रम बनाया। खादी को कटाई–बुनाई द्वारा स्वावलम्बन की योजना पर प्रकाश डालते हुए वे लिखते हैं कि चरखा प्रचार के सिलसिले में बुनाई की मर्यादा को समझने तथा निश्चित करने की जरूरत है। काटना करोड़ों का काम है, बुनना लाखों का। कटाई का काम सदा ही विशेष रूप से सर्वमान्य धंधा रहेगा। मगर बुनाई हर हाल में मुख्यतः एक स्वतंत्र धंधा बनकर रहेगा। कटाई के पुनरोद्धार पर करोड़ों का आर्थिक और नैतिक जीवन निर्भर है और इस काम को सफल बनाने के लिए जुलाहों व्यापारियों आदि तमाम राष्ट्रीय अंगों के विकास की आवश्यकता है। कटाई के काम की सफलता से धर्म जागृति और आत्म–शुद्धि सन्निहित है।

इस प्रसंग में यह उल्लेखनीय है कि गाँधी की दृष्टि में जैसा कि B.P.Verma ने बताया है – Gandhi was not only an economic but also a political phenomenon. He an absolute believe in the conception the inversion adoption of Khaddhar by Indian was equpvident to the acauisity of Swaraj. Daily spinning on the wheel was a symbolical of a dedication to the India. Khadi was also a symbol of enmity of India. Further more khadi was a potent instrument of mass up-list and mass-education.

उन्मुख विकेन्द्रीकरण :

उपर्युक्त तथ्यों का यह आशय नहीं कि गाँधी का लगाव सिर्फ चरखे से ही था। निश्चय ही भारतीय स्थिति में चरखा को प्रमुखता मिल गई। किन्तु केवल चरखा के क्षेत्र में ही नहीं उत्पादन के समस्त क्षेत्रों में कृषि यथासंभव अन्य उद्योगों में भी गाँधी विकेन्द्रीकरण पर अधिक बल देते थे। जो चरखा अर्थनीति का शब्दार्थ हो हमें ग्रहण नहीं करना चाहिए। अपितु इसके निहितार्थ को समझने की आवश्यकता है जहाँ तक निहितार्थ का प्रश्न है, वह है, क्षत्रयता पर आधारित आत्मनिर्भरता की ओर उन्मुख विकेन्द्रीकरण। इस संदर्भ में यह सुझाव दिया जा सकता है कि भारत यही विशाल जल–विद्युत शक्ति को, जो सारे संसार का 5 वाँ भाग है, काम में ला सके और असंख्य शक्ति–ग्रहों में असंख्य उत्पादन ईकाईयों को शक्ति दे सके तो हम आसानी से क्षेत्रीय आत्मनिर्भरता की स्थिति उत्पन्न कर सकते है। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि आधुनिक उद्योग के सर्वोच्च प्रणेता Hast Honery Ford ने स्वयं अपनी उपलब्धियों के विषय में कहा था ''डेट्रायट में स्थित मेरा विशाल कारखाना एक मृतप्रायः दानव की भांति है।'' आगे जाकर इन्होंने विशाल कारखानों की जगह अनेक छोटी–छोटी विद्युत चालित निर्माण–शालाओं की स्थापना की बात को सोचना आरंभ कर दिया।

दुर्भाग्य की बात है कि गाँधी के चेलों के आजाद भारत के नेतृत्व की बागडोर को थामा। गाँधी के आर्थिक विचारों की उपेक्षा कर पश्चिमी ढंग से औद्योगिकीकरण का निर्णय लिया। रूसी, अमेरिकी चकाचौंध में गाँधी की नीति इन्हें रूढ़ीवादी

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.01, May : 2023

और प्रतिगामी दिखाई दी और इनके लिए प्रगति का अर्थ हो गया। पश्चिमी का आधुनिकीकरण। दूसरी ओर संसार के अनेक देश जैसे चीन, वियतनाम, तंजानिया, वगैरह ने गाँधीवादी आयोजन का लाभ उठाया। इन्होंने शेष संसार को यह दिखला दिया कि विकास की प्रारंभिक अवस्था में गाँधीवादी आयोजन कितना महत्वपूर्ण है। भूमंडलीकरण के इस दौड़ में भी आज दुनिया के लोगों की नजर गाँधी पर बार–बार पड़ रही है और लोगों को यह एहसास हो रहा है कि अर्थजगत में व्याप्त विभिन्न समस्याओं का निदान गाँधी के बतलाए रास्ते से ही संभव है।

शारीरिक श्रम :

टॉल्सटॉय तथा टसकिन के विचारों से प्रभावित गाँधी ने कायिक श्रम को अस्तेय के सिद्धान्त के अनुरूप तथा अपरिग्रह की अनुभूति का साधन माना। कायिक श्रम का आधारभुत सत्य है स्वयं के शरीर द्वारा श्रम के माध्यम से अपनी आजीविका कमाना। रोटी, व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता का प्रतीक है। दूसरों के श्रम से आर्थिक लाभ प्राप्त करना चोरी है, जो शारीरिक श्रम नहीं करते, वे गरीब व्यक्तियों के श्रम का अनुचित लाभ उठाते है। यदि कृषि कार्य संभव न हो तो व्यक्ति अन्य प्रकार के शारीरिक श्रम का पालन कर उत्पादक शारीरिक श्रम करें। जैसे–काटना, बुनना, बढ़ईगिरी, लुहारगिरी का काम आदि। गाँधी ने चरखें का प्रयोग इसी कारण किया है कि कटाई कृषि से भी अधिक लोकप्रिय बनायी जा सकती है। सत्याग्रहों के लिए चरखा काटना स्वैच्छिक कायिक श्रम है। कटाई का महत्व गाँधी ने इस कारण भी माना है कि चरखे द्वारा ग्रामीण भारत की जनता न्यूनतम धन से अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकती है। चरखा करोड़ों व्यक्ति की आजीविका का सहारा बन सकता है और प्रत्येक की जेब तक धन पहुँच सकता है। गाँधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में चरखे को लोकप्रिय बनाकर उसे अहिंसा का भी प्रतीक बना दिया। चरखा शोषण नहीं करता है तथा अवला व वृद्ध का सहारा बनता है।

अनिवार्य कायिक श्रम व्यक्ति को जीवन को निरस बनाकर उसको निर्धनता तथा असंतोष को जन्म देता है। अधिक शारीरिक श्रम, परिग्रह का कारण नहीं बनना चाहिए। व्यक्ति अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर शेष सामाजिक हित में अर्पित करें। पूँजी का समतापूर्वक वितरण इसी उद्देश्य से प्रायः होता है। गाँधी के विचार में विश्व में सुख और प्रसन्नता का वातावरण तभी बन सकता है जब व्यक्ति स्वेच्छा से बिना किसी बाध्य नियंत्रण अथवा दबाव के कयिक श्रम करें। शिक्षा के क्षेत्र में भी गाँधी ने कायिक श्रम का प्रयोग किया है। उनकी बुनियादी शिक्षा का नयी तालिम की योजना में मानसिक विकास के लिए हाथों का उपयोग श्रेयस्कर माना है। गाँधी ने खादी के महत्व को शारीरिक श्रम पर ही आधारित माना है। अपने हाथ से काटे हुए सूत से बनाए गए खादी वस्तुओं का उपयोग तथा अपने कायिक श्रम द्वारा उपजाया अन्य व्यक्ति को जीवन में स्वावलंबी बनाने का श्रेष्ठ मार्ग हैं ग्रामोउद्योग की दृष्टि से भी खादी तथा अन्य कुटीर उद्योगों का विकास समस्त आर्थिक दुर्गुणों का निवारण करने में सक्षम है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गाँधी और मानव अधिकार–रितुप्रिया शर्मा; पंचशील प्रकाशन, जयपुर ।
2. महात्मा गाँधी : जीवन और दर्शन – रामलाल विवेक, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
3. महात्मा गाँधी– रोमा रोमा; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. गाँधी का पंचायती राज : डॉ. महेश्वर दत्त; हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
5. आर्थिक प्रणालियाँ अर्थशास्त्र : सं.वी.एन. पंडित, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

Copyright @ 2023 Author